✪ प्रार्थना ✪

शब्दार्थ :- नमामो = नमस्कार, वयं = हम सब, मातृभू = माँ सी भूमि, पुण्य भू = पुण्य भूमी, त्वाम = तुम को, त्वया = तुम्हारे द्वारा, त्वत = तुमसे, सुता = पुत्रियाँ, अये = हे, वत्सले = वत्सल्यमयी, मंङ्गले = मंगलकारी, हिन्दूभूमे = हिन्दूभूमी, स्वयं = खुद, जीवतानि = जीवन, अर्यपयामः = अर्पित करते हैं, त्वयि = तुम पर।

भावार्थ :- हे मातृभूमे, पुण्यभूमे, ये तेरी कन्याएं जिनका संवर्धन और संस्करण (पालन-पोषण एवं सुस्कारिता) तूने किया है वे सब तुझे प्रणाम करती हैं, हे ममतामयी शुभकारी हिन्दूभूमे तेरे लिए हम अपना जीवन (जीवित रूप में) समर्पित करती हैं।

✪ प्रार्थना ✪

शब्दार्थ :- नमो = नमस्कार, विश्वशक्तये = विश्व की शक्ति, निर्मितं = बनाया गया, महत् = महान, प्रसादात् = कृपा से, तवैवात्र = (तव = तुम्हारी, एव = ही, अत्र = यहां), सज्जा = तैयार (सिद्ध), समेत्य = मिलकर, समालम्बितुं = सहारा लेने के लिए, दिव्य मार्गं = दिव्य राह, वयम् = हम सब।

भावार्थ :- हे विश्वशक्ति तुम्हें नमस्कार, तुम्हारे द्वारा इस महान हिन्दु राष्ट्र का निर्माण हुआ। यह तेरी ही कृपा है कि हम सब संगठित हो कर इस राष्ट्र सेवा के दिव्य मार्ग का अवलम्बन करने के लिए सिद्ध (तैयार) हुई हैं।

✪ प्रार्थना ✪

शब्दार्थ :- समुन्नामितं = भली प्रकार से उन्नंत, येन = जिसके द्वारा, राष्ट्रं = राष्ट्र, न = हमारा, एतंत् = यह, पुरो = समक्ष (सामने), यस्य = जिसके, नम्रं = झुकना, समग्रं = समस्त, जगत् = संसार, तद् = उस, आदर्श = आदर्श, युक्तं = युक्त, पवित्रं = पवित्र, सतीत्वं = सत्, प्रियाभ्य = प्रिय के लिए, सुताभ्य = पुत्रियों के लिए, अम्ब = माँ, ते = तुम्हारी।

भावार्थ :- हे माँ! अपनी प्रिय पुत्रियों को पवित्र सतीत्व के आर्दश से युक्त करो जिसके कारण अपना राष्ट्र इतना उन्नत हुआ कि सारा विश्व उसके सामने नत मस्तक है।

✪ प्रार्थना ✪

शब्दार्थ :- समुत्पाद = उत्पन्न हुई, यास्मासु = जिसने, शक्तिं = शक्ति को, सुदिव्यं = सुदिव्य, दुराचार = बुरा आचरण, दुर्वति = बुरी वृत्ति, विध्वसिनिम = नाश करने वाली, पिता–पुत्र–भ्रातृश्च–भर्ता = पिता–पुत्र–भाई और पति, सुमार्गं = अच्छे मार्ग की ओर, प्रेरयन्तीम् = प्रेरित करने वाली, इह = इस,

भावार्थ :- हे माँ! हमें ऐसी दिव्य शक्ति प्रदान करो जिससे हम बुरे आचरण और बुरी वृत्ति का नाश कर सके और अपने पिता, पुत्र, भाई और पति को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सके।

✪ प्रार्थना ✪

शब्दार्थ :- सुशीला = शीलवान, सुधीराः = धैर्यवान, समर्था = समर्थवान, समेताः = सबको साथ लेकर चलने वाली, स्वधर्मे = अपने धर्म, स्वमार्ग = अपने द्वारा निश्चित किया हुआ मार्ग, परं = बहुत अधिक, श्रद्धया = श्रद्धा से, वयं = हम सब, भावि = होने वाली, तेजस्वि राष्ट्रस्य = तेजस्वि राष्ट्र की, धन्याः = धन्य (सेविकाएं), जनन्यो = जननी (जन्म देने वाली), भवेम् = बने, इति = ऐसा, देहि = दीजिए, आशीषं = आशीर्वाद।

भारत माता की जय!

भावार्थ :- हम सब सुशील, धैर्यवान, सामर्थ्यवान, संगठित और परम श्रद्धा के साथ अपने ध्येय मार्ग पर चलते हुए इस तेजस्वी हिन्दू राष्ट्र की कृतार्थ (धन्य) माताएं (निर्माण कर्त्री) बनें। हे माँ हमे ऐसा आशीर्वाद दीजिए।

भारत माता की जय!

राष्ट्र सेविका समिति की प्रार्थना

नमामो वयं मातृभूः पुण्यभूस्त्वाम्
त्वया वर्धिताः संस्कृतास्त्वत्सुताः
अये वत्सले मङ्गले हिन्दुभूमे
स्वयं जीवितान्यर्पयामस्त्वयि।।१।।

नमो विश्वशक्त्यै नमस्ते नमस्ते
त्वया निर्मितं हिंदुराष्ट्रं महत्
प्रसादात्तवैवात्र सज्जाः समेत्य
समालंबितुं दिव्यमार्गं वयम्।।२।।

समुन्नामितं येन राष्ट्रं न एतत्
पुरो यस्य नम्रं समग्रं जगत्
तदादर्शयुक्तं पवित्रं सतीत्वम्
प्रियाभ्यः सुताभ्यः प्रयच्छाम्ब ते।।३।।

समुत्पादयास्मासु शक्तिं सुदिव्याम्
दुराचार-दुर्वृत्ति-विध्वंसिनीम्
पिता-पुत्र-भ्रातृंश्च भर्तारमेवम्
सुमार्गं प्रति प्रेरयन्तीमिह।।४।।

सुशीलाः सुधीराः समर्थाः समेताः
स्वधर्मे स्वमार्गे परं श्रद्धया
वयं भावि-तेजस्वि-राष्ट्रस्य धन्याः
जनन्यो भवेमेति देह्याशिषम्।।५।।

भारत माता की जय